पद २४९

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

सुगर उतारनहार। प्रभु खेवट मारो।।ध्रु.।। शरन आये वाको दोख न जाने। कर देत सागरपार।।१।। मानिक के प्रभु भक्तिन भूखो। कहूं न जाने बिचार।।२।।